

ॐ नमो ग्रीवाय ॥ ॐ न
मो ग्रीवाय दवाय म सुं ॐ य प्रि म
रुय ॥ प्र यी द वी म ह ग म तिन म स
ग कि नू यि नी ॥ ॥ दि द्या रु का
दिः सा दे वि म पु त य प्र मि वृ ति ॥
सर्व वि द्य वि ना ग म य द्वा ना दी न्य

विगमचयः॥२॥नद्यादिद्वानयात्
गगुत्रयकिस्त्रयेवच॥द्वानादिद्व
त्रयासिन्यः॥भक्तिस्त्रयीगमलव
न॥३॥यागात्तादिगिवाक्यः
उवनहाटक्यत्र॥३॥सूत्रा
सूत्रासर्वभक्तिमाशक्तानाम

१

॥४॥नागश्च नागनागिना विन
दय्यवत्तायनायागात्तवसुत
सर्वभक्तिर्वैकुण्ठमसदा॥५॥
नाहसा नाहसी सर्वविगमवाच्य
विगमविनी॥६॥सर्वदवयात्त्यग्य
भक्तिमाशक्तानाम॥७॥६॥

ताम्बूलनिनीमाणा यद्वाग्ययद्वली
नथा ॥ सन्नुषाः सर्वलवतगीधुं
गभक्तिकत्राहुम ॥ १ ॥ प्रियवयस्य
नूयाम्बुल्लायनगवसकुगन ॥
नसर्वगभक्तिकं तदंसदाका नंद
दाहुम ॥ २ ॥ किन्नरा किन्नरैस्सर्व

२

महात्रगमहात्रगि ॥ गभक्तिकत्राहु
मदवी यानियतप्रजायन ॥ ३ ॥
विद्याधरास्तुयागस्तुगभक्तिकया
विगापिव ॥ कत्राहुमसदागभक्तिं
सर्वकालं तुल्येवव ॥ ४ ॥ गत्र
जगन्जीववर्कलाभस्तुस्य

याधिना॥ भक्तिकेनाहुमनिशं
सर्वत्रिषुयन्मगनं॥ ११॥ समूहा
सत्रिग॥ येवपर्वनाश्ववनदुमा
॥ पत्यताः कयेवापीच भक्तिके ३
र्वनुमसदा॥ १२॥ द्वीयां येवा
यद्वीयाश्वनानात्रूयाश्वऊनव

सर्वभक्तिं कतास्ववसर्वपायप
त्रिहारां॥ १३॥ भक्तनदस्यकाशा
श्वकृप्रापदुपकाश्वय॥ पी॥ १४॥
पी॥ सन्दाहः भक्तिमागुक्ताहु
म॥ १५॥ उपसंदाहकाः सर्वम
ताय॥ कायमसका॥ चत्वात्र॥

पवत्वा तः सदा स्वस्वयन कुरु ॥
॥ १॥ एयि याः सर्व युवनाय ऊर्जव
कदाह कान् ॥ अन्ता इव सर्व प्र
गान्ति मातु कत्रा तु म ॥ १॥ ॥ स्व
लर्ज युवनय र्थ क्व क्रा तुः स
क कादय या गवः सर्व महामा

४

ता पृथि कूर्वन्तु मसदा ॥ १॥ ॥ ज्ञा
दित्यः सामर्य युः सोम्य देव तु
वृहत्तु ॥ गनी त्रदू ग्रहः कर्तुः
गान्ति मातु कत्रा तु म ॥ १॥ ॥ वा
तग्रहायू वा वापि वृद्धा ल्रे नम
कग्रहा ॥ गान्ति कत्रा तु गगनं व

तसोखकनंनथा॥१२॥वाक्कीमा
हयत्रीवेवपुष्पावेववीगथा॥
वात्राहीसावगकीचगानिमाउ
कत्रागुमे॥२०॥वामूअचमहा
तस्त्रीत्रडाएवेवगएवत्रा॥कू
मात्रादिनयाग्यगानिंकूर्वन्तु

ज

मसदा॥२१॥गात्रकात्रागियाग
ग्यग्रहाएवगिथयत्तु॥सग्न
हायनवृष्टीहि कूर्वन्त्यात्राग्यम
रुमं॥२२॥वक्त्राविष्णुसुखापूड
क्कीग्यत्रग्यसदागिवागिवग
किमहागगमगानिंकूर्वन्तुम

निग॥२३॥हेन वाहेन वीसर्वा यय
द्याना ग्य धान का ॥सर्व सुयीति
मनसा गिवं कूर्चनु मे सदा॥२४॥
कच्चि न ग्य गिरवा वर्म नना मुया ७
मह ग्य ना ॥कूर्चनु मे महा गमि
सर्व कातं सुमा वहा ॥२५॥सान्

यगु वपूर्वा कं पोर्नु ग ॥पोर्नु मा
ग्यनी॥सर्व गमिके ना स व सर्व
दुख विना गनं॥२६॥निगम वद
द्विभ स्यात्त दी पान्य यति गग्य
ना ॥निगम नाथी जन ॥सर्व ॥सदा
पूषि ददा गु म॥२७॥यग्यि मात्त

कृष्णायानां गीन्ध काप्रयत्रूपिनी
कृष्णसुसगगं गभक्तिं सदा कालंद
दागुम ॥ २५ ॥ कालिकात्रयनाख्या
नायाउ गभक्त्या कीर्तिना ॥ सद्योति
ष्वविनिर्मकं मरुपागवनागतं
२२ ॥ उर्ध्ववदयनाख्यानां वर्तिका

मवमहात्म्यं ॥ ३४ ॥ कृष्णयासांग
नायादीनां नीवदकारुमथास
र्वसुप्रोमिमनसा गभक्तिं कृष्णं
मसदा ॥ ३५ ॥ यागासादिमिवात्त
वज्रानयादिकाद्युषिमात्तुषि
मसदा नूतनं सदा यष्टिं कन

तुम ॥ ३० ॥ वि श्वस्ति तिर्या चमूर्ति
लिङ्गकृतिरुत्तमकृति ॥ सर्वोत्तीष्ट प्र
दा देव उगमनि मातु कना तु म ॥ ३१ ॥
एकनाममृतागल मस्तस्मिन्
नात्रमा ॥ चतुर्दशमृता तस्मिन्
निर्वस्ति सदा ॥ ३२ ॥ देव उगम

नसंज्ञा विः सर्वपाप हयं कत्री ॥ स
दायूषि सदा उगमनि कर्म कर्त्तु
मसंज्ञा ॥ ३३ ॥ को मी द्यादि नि
वान् विः वज्र नवं व्याकं समस्त
ग्वना ना नानूय निनूय यत्र संमा
यादिसिद्धि युदं धादूः खल्लग्नयज

त्रादिपापहृत्तनं साहिबुत्तुममति
४सायं श्रीकृत् नमः चतुस्रमतिमान्
पुष्पत्रयापुवः ॥ ५० ॥ नूनं न्यादवद १०
वेत्या ४ मन्त्राव्याया इमृती ग्वत्रानरा
हकिरावं य ० चवं महापातकनो
गनं म॥ कातिरुन्माङ्गितं पापं बाल

यो वनवाडु क॥ य ० नात्र श्वनगस्य
सर्वाहीश्वरुत्तप्रदं ॥ ज्ञायूदं सुखदं
युगुंधनधान्यवत्रमियं ॥ गङ्गा
गंजयंप्राकं सर्वकामार्थसिद्धिदं ॥
हयंसर्वविनिर्मुक्तं यथा ४ सर्वसु
खं हवन् ॥ त्रिजयस्त्राविमूच्यन्तः

गंगा वृद्धाय नमः ॥ ॐ ह्रस्वलाग
 लगी वयन प्रवयन गतिं। पस्मिद
 लष्य वृद्धन प्रदलष्य गतिकं ध्या
 य वृद्धन गतिकं ध्यायं स्वयं वाचैव
 य वृद्धन ॥ ३ ॥ दृगं वाचयन् वं महाया
 नक नागनन् ॥ गन्ध्या ध्यायं मिदं ना

९१

मय ० लूनं समाहितं ध्या सर्ववध
 विनिर्मुक्तं सर्वकामार्थसिद्धये ॥
 ॥ ॥ लूनि प्रीति प्रज्ञाना नुवे महा
 नकु मय्यु ज्ञय गन्ध्या ध्यायानाम
 १० मीय १ समायं ॥ ॥ ॥
 २ मय्यु ज्ञय प्रीतिन कु ॥ ३ ॥

12

श्री १०८ श्री गणेशाय नमः
1378
ASHA ARCHIVES

ॐ नमः ३३ त्कादये नमः ॥ वगिष्
उवाच ॥ ॥ कथं दूःखनिम
लमि किमर्थमतिनमूखं ॥ म
माद्यकथं नादूःखं उवाच व
सि सायनं ॥ ॥ हनिष्यत्युवा
च ॥ नाद्य उवाच महत्ता नाधन

१

६०

नालगादिकं नग ॥ यत्पादीनां कथं
तत्तं यत्किं हर्षं वदयत् ॥ ॥ वगि
षु उवाच ॥ गृन्ना जनयव द्या मि
उत्पास्यं विप्रिहं ॥ नागलगाका
धिहृत्तं सर्वसो लम्बवर्द्धनं ॥ धा
नतां वृत्तं लगिष्वा उत्पादयाय

पूजनं॥ सा उ श्र य क्ष नां व स वि
य किं ना ग य ल यं ॥ ॥ उं अ स
प्रा उ त्का द या सा उ म नु स्य ॥ य
वि अ वि स उ स मा र या ना व रू ना
चु न उ च ना ॥ उ त्का द वा वा उ अं व
जा ग कि कौ न की त वं ॥ म मा धि

२

६७

दू १ र व म नु र्धं वि नि या ग य की
किं तं ॥ उ त्का द वि म हा ना डी अ
वि मू क वि ना गि नी ॥ म न्द मा ना
वि म हा ना डी या गि नी ग ल वा नि
नी ॥ त्रि नी स र्व दू १ र वा नां ना
गि नी त्रि य या कि नी ॥ क्ष न दा णी

मा कृकनासिद्धि दा सोखदासः
 दा॥ इवूरु नि मा हा मा या सुखनि
 वृषनासिनी॥ एवदु इखरुनी सो
 म्यादु वृग्रु वि मर्दिनी॥ द्यायान्
 यधना पूरु य द्या य द्यवनी नि
 बा॥ वउवा नूयिनी उ द्या उ धः

३

८२

अर्धना रि कवच

रश्मिरामायनमशाश्वरुनुमत्रयै
नमशां नृस्यग्रीप नृमरिव
रुनृमनुस्माप्रमनुस्माग्रीनाम
वनुमृषि नृनृयुय नृन्दश्यं
नृमरिवरुनृमानदेवेगाहनृ
मानीति वीजं वायुगुणं नृति

गकिं ४ अंजनीसूत्रं त्रिति ००ति
कीलकं ग्रामा मचन्द्र हनू मनुष्य
सादसिद्धार्थ सकलता काप्र
कात्रार्थ पंचमुखि हनू मनुष्य
वचस्मा प्रंजय विनियोग गथा
अथ न्यास कृत्वा याजं अंजनीसू

१

गक

गाय अंगुष्ठाणां नमः याजं नूडम
र्जय गङ्गा नीलो नमः याजं वायु
पूजाय मधुमाणां नमः याजं अ
रुग्निगर्तय नूनो मिच्छाणां न
मः याजं नामदूगाय कनिष्ठिका
णां नमः याजं पंचमुखि हनू मं

गायकस्तनस्य वृत्त्यां नमः
नवं दद्यादि न्यासमात्रं
मदगायत्रं निसूनाय वायू
नायमहावत्ताय गीतादृष्टव
निवात्रनायपत्तं कादहत्तं का
दहत्तायमहावत्तपचंडाय

२

हर्गुवुसुषाय काताहत्तसर्व
वक्रार्तुविश्वरूपाय सफस
मूद्राणि त्रात्मि नायपिस्त
नयनाय मिनिवित्रदमाय सु
यविम्यत्तसुवायदुष्टनित्रा
तदनायसंजीवनित्रातदन

नायत्रंगदसकुलकपिसेन्य
 पार्श्वनिवाहुरुकायदगकलृवि
 धंसनायत्रामयूरालुगूम
 हसखागितासमगत्रामचतु
 वत्तयसादषरुप्रयाल्मभ्राग
 मयचमूरिवहनूमत्कववस्या

3

九

ह्रा॥ ॥ उं ह निम क टीय
रै रै रै रै रै रै रै स्वा हा ॥ उं ह
निम क ट म क टो य दू दू दू दू
दू द्वि षट् स्वा हा ॥ उं ह निम क
ट म क टो य खे खे खे खे खे मा
न ना य स्वा हा ॥ उं ह निम क ट

मर्कटायट्टट्टट्टट्ट सं ह नाय
स्वाहा॥ॐ ह्रि मर्कट मर्कटा
यउउउउउउ आक्र मसि सुव
ल संवत्स नाय स्वाहा॥ॐ उ
ड मुख ह य ग्री वाय नू नू नू
नू नू नू ड मू ल य सु व न ऊ

५

शे

न नि वा ह का न पू पं च मू र्खी
वी न ह नू म क्रा य स्वाहा॥ॐ
नू चा ट न कू नू कू नू ट्टट्टट्ट
ट्ट क मू ल य वं च मू खि ह न
मं त य य न य य नू य न य य नू
वि दा न ना य स्वाहा॥ॐ कै र्वे

ध्वं ध्वं संटं धं नं यं रं वं वं सं गं
वं रं नं रं स्वाहा ॥ ॐ ति दि ग्व
नं ॥ पू वं क वि मुख पंच म
खि ह नू मान टं टं टं स क न
म मु स हा त ना रा स्वाहा ॥ ॐ
द क्षि मू मुखि पंच मू खि ह

५

७०

नू मं नाय नमः ॥ ह न यु न वि
म च वृ क्क ना ह स म कि नी
दा कि नी ज्ञ न रि ह ग्र ह यं
नु य न ग नु उ च्छा ट ना य स्वा
हा ॥ स क त ज न नि र्वा ह क न
नू प च मू खि ह नू मान वी न

यसादकाय ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ स्वाहा
॥ ॥ इंदं कवचं पठि त्वां पु
महाकवचं पठेन्नरः ॥ चक
वात्रं पठेत्सा ग्रं सर्वं गच्छति
वात्रं नू ॥ द्वि वात्रं पठेत्त नि
हो या फ मे श्वर्यं वरुं ॥

७

७९

प्रिवात्रं पठेत्त निशं सर्वं संपत्क
उरुं ॥ चतुर्वात्रं पठेत्त निशं सर्वं
त्रागति वात्रं नू ॥ पंच वात्रं पठेत्त
निशं पंच मुखी वगीकृ गं ॥ अ
व वात्रं पठेत्त निशं सर्वं दवव
गीकृ नं ॥ सफ वात्रं पठेत्त पठेत्त

नित्यं सर्वं सो लग्नदायकं ॥ नृसू
॥ वात्रं यत्थ नित्यं नृसू का
मार्थसिद्धय ॥ नवा वात्रं यत्
नित्यं नाज लग्न समा लह नृसू ॥
दग वात्रं यत्थ नित्यं ताक वि
ज्ञानदायक ॥ प्रकाद लग्न मत

१२

कामात् सर्वसिद्धिस्तत्तत् ॥
कवचस्मरणं माधनमहाव
त्तसमन्विता ॥ ॥ ॐ नमो
ग्रीहदर्शनसं हि नाया ग्रीह
मचन्द्रगीतामन्त्रं हन ग्रीह
॥ मूर्खी हन मानकवचः

संयुक्तसमायं ॥ ॥ श्रीहनु
मानहेतव्यमित्रमुखा ॥
ॐ नमोऽग्रीवामानमः ॥ ॥
ॐ नमोऽग्रीवयग्रीवकवयस्य
हयग्रीवमित्रनक्षत्रद
हयग्रीवादवतासर्वेयसि

७३

श्रुत्युपविनिर्गता ॥ ॥ हय
ग्रीवः मित्रपाशुतलावद्रम
धगंताममृद्विदलोपाशु
मृद्वस्मात्मकंऽशुनी ॥ धान्
गंधात्मकंऽपाशुवदनंयहसं
हयः ॥ जिह्वं वागीश्वरऽपाशुमूकं

दादकसंहतिं॥३॥शृं वक्रात्मक
४पापु यापु नात्राय (॥३॥ध्रुवं॥गि
वात्माविवृकं यापु कया लोकम
नापनि॥४॥विं द्वात्मापि० त्रयापु
कल नादात्मकाविशु॥५॥उजो
यपु उजं॥६॥यापु कनो देत्यं॥७॥म

७५

ईनं॥८॥ज्ञानात्माद्वयं यापु विग्न
त्मावृत्तयुग्मकं॥९॥मक्षमं यापु स
र्वात्मा यापु पीतां वन० कठिं॥१०॥कूदि
विग्नं त्रयापु वसिहं (॥११॥वसि
पयं॥१२॥नाहिं मयद्म नात्मा इवाहु
यं॥१३॥कार्यं बाधक॥१४॥उत्तूदामा

दत्रंऽयापु ऊनूनीमधूसूदनशा
 पापु ऊं धमहा विष्णु पुर्ह पाया
 पुऊना ई नशा पादो प्रिविक्रमं पा
 पु पापु पादां पुतीरु नीशा सर्वा
 गंसर्वदायापु पापु त्रामानिकग
 वशा धा गूना दीगतंऽयापु हाया

१०

११

तस्त्रीयतिर्मम ॥ पू ज्ञानविल्य
 ग्वत्रऽयापु पापु वक्षुन पुत्रग्य
 तशा विरु मिंद्रात्मकंऽयापु वा
 कात्मा गदुसंरु न ॥ प्रा नून
 वा कात्मकंऽयापु द्रुं विग्वे
 रुत्रात्मकं ॥ कनू नूत्मा तसा

नृपाणु वामात्मा हनु उहंगतं
॥ दि वात्रा प्रंदृषी क ग ४ पाणु
सर्वजगद्गुरुं ॥ विषम ग कट
ववपाणु दम क न म म ॥ सवि
दानन्द नृपाम स्नानं तद्गुरुस
र्वदा ॥ वाचा तद्गुरुदि वात्माः

११

४४

ब्रह्मणा स्नान दीपक धायाम्ना
वाधप्रदः पाणु नैमृणां विगु
घनप्रभुः ॥ विद्यानिधिस्तु वा
नृणां दीपकां विन्मया ममा
को वणां विरुद पाणु या लीग
न्या उगय नि १ ॥ उ द्या पाणु उगः

गुह्यामीयात्तधस्तान्पत्रान्यत्र
॥ तद्वाहीनं गुयन्स्तानत्रकृत्य
खित्तनायकः ॥ ॐ नितं कीर्त
यद्गुम्बकवचंदवपूङ्क्तिगं ॥ त
वद्वाद्गमस्तुल्यं यत्रगवर्था
मनीगवत्र ॥ तद्गुसंख्यातवन्

१२

७७

सोपिदुत्तंवकुं नगच्छत ॥ ॥
ॐ नितग्रीहयग्रीवकवचसंपू
र्यसमाय ॥ ॥ ग्रीहयग्रीव
योनित्रमु ॥

१३

७८

1378

ASHA ARCHIVES

92